Chapter - 1

प्रथम अध्याय

पृष्ठ भूमि, युगबोध, नारी चेतना का विकास, विभिन्न परिवेश, नारी की
पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, हिन्दी साहित्य में नारी का स्थान ।

प्रथम अध्याय

पृष्ठभूमि –नारी चेतना का विकास

मानव–जीवन में उत्थान पतन अनिवार्य है। उसमें नारी जीवन में पुरुष की अपेक्षा विषमताएँ अधिक हैं। इसका कारण सामाजिक प्रतिमानों तथा नये आदर्शों की समय– समय पर स्थापना है। कोई भी साहित्यिक कृति सामाजिक परिस्थितियों का ही प्रतिफलन होती है। अतः नारी सम्बन्धी भावना किसी काल के विशेष परिवेशानुरूप ही साहित्य में प्रतिविम्बित होती है। भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी की अनेक भूमिकाएँ रही हैं

धार्मिक एवं सामाजिक अवसरों पर पत्नी का विशेष महत्व रहा है। पत्नी शब्द के बहुत सारे पर्यायवाची हैं। भार्या , सहचरी , सहधर्मिणी, धर्मपत्नी आदि। स्त्री अपने जीवन का अधिकांश भाग पत्नी के रूप में बिताती है। वह पत्नी बनने के बाद अपने सम्बन्धों को ,बेटी के रूप में,बहन के रूप में समाप्त नहीं कर लेती,बल्कि पत्नी के बनने के बाद माँ बनती है। वह बहू है,भाभी है। ससुराल में भी उसके बहुत सारे रिस्ते हैं,किन्तु मुख्य भूमिका पत्नी की होती है। इसलिए वैदिक समय से ही पत्नी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उसकी उपस्थिति सर्वत्र अनिवार्य है क्योंकि वह गृहलक्ष्मी है, सामाज्ञी है। घर की सीमाओं के अन्दर उसका आधिपत्य है। परिवार में 'माँ' देवी के समान पूज्या है। कन्या को एक रत्न के समान समझा जाता रहा है, जो दोनों परिवारों को पितृकुल व ससुरकुल को अपनी आभा से सुशोभित करती है। मनुस्मृति में कहा गया है कि–

" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता "–1

जहाँ स्त्रियों की पूजा होती हैं वहाँ देवता रमण करते हैं। इसके विपरीत जहाँ स्त्रियाँ अपूज्य होती हैं वहाँ सभी कियायें निष्फल हो जाती हैं।

संस्कृत कवियों में कालिदास , भवभूति व बाण भट्ट आदि नें नारी का सम्मानजनक चित्र खींचकर उसे गौरवान्वित किया है। वैष्णव और शैव सम्प्रदायों ने नारी को लक्ष्मी तथा शक्ति नामों से सम्बोधित किया तथा उसे सम्माननीय स्थान दिया। संस्कृत नाटकों में नारी का स्थान उच्च रहा है। हिन्दी साहित्य में नाटकों की परम्परा का प्रादुर्भाव संस्कृत साहित्य के

1– मनुस्मृति

समृद्ध नाटकों की परम्परा से हुआ है। ब्रहमा जी ने भरतमुनि को नाटक के लिए सौ अप्सराऐं दीं, अभिनय , गायन व नृत्य के लिए। जिसमें नारी पात्रों की अनिवार्यता मानी गई है। नाटक में नारी का स्थान आवश्यक माना गया। जिससे नाटक में नारी की प्रधानता सिद्ध होती है। ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नियॉं ' गार्गी ' एवं ' मैत्रेयी ' का नाम सर्वविदित है। आठवीं शती में मण्डन मिश्र की पत्नी ' भारती ' का नाम महान विदुषी के रुप में जाना जाता है।

इतना गौरवशाली इतिहास होने पर भी उसके बाद के साहित्य में महिला लेखिकाओं का सर्वथा अभाव है। यह विचित्र विडम्बना रही है।

सामाजिक परिवेश का प्रभाव साहित्य पर पूर्णतः पड़ता है। साहित्य समाज का दर्पण है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब माना है।–"प्रत्येक देश का साहित्य वहॉं की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। "–1

राजनैतिक परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। इस्लामी आक्रमण से हमारी सुख शान्ति छिन गई। जिस नारी को इतना उच्च स्थान प्राप्त था,उसे बचपन में पिता, यौवन में पति, तथा वृद्धावस्था में पुत्र के आश्रय में रखकर अबला तथा रक्षणीया बना दिया गया। उसे अवगुण्ठन में रखा जाने लगा। उसे कौतुहल की वस्तु बना दिया गया। उसे प्रकोष्ठ में रखा जाने लगा।

हिन्दी नाट्य साहित्य में नारियों का पदार्पण काफी देर से हुआ, इसके लिए हमें तत्कालीन परिस्थितियों में नारी की स्थिति का अवलोकन करना पड़ेगा।

आदिकालीन हिन्दी साहित्य जैन सिद्ध और नाथ साहित्य तथा वीरगाथाओं के अध्ययन के द्वारा तत्कालीन नारी की स्थिति के सम्बन्ध में कुछ निष्कर्षों पर पहुॅंचा जा सकता है। जैन साधुओं की दृष्टि में नारी त्याज्य रही, बौद्ध धर्म की विकृतावस्था में नारी भोग माध्यम से निर्वाण प्राप्ति का साधन मानी गयीं। वीरगाथाओं में नारी का भोग्या रुप ही प्रधान रहा,वह पुरुष की प्रेरणा है,सहचरी नहीं। इस्लाम की भोगविलास की प्रवृत्ति के कारण ही वह पुरुष की कृपापात्र व दासी बन गयी। नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की समाप्ति हो गयी। वह पुरुष के सहयोगिनी के

1–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– हिन्दी साहित्य का इतिहास काल विभाग
22सवॉं संस्करण सं. 2045 नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी ।

रुप में असमर्थ मानी गयी। केवल स्वकीया या परकीया के रुप में पुरुष श्रृंगार भावना की वृत्ति का साधन मात्र रही। आदिकालीन नारी वीर प्रसू होते हुए अत्यन्त अशोभनीय स्थिति में थी। विद्यापति के समय लखिमा बाई प्रसिद्ध थीं।

मध्यकाल में संतों ने नारी को कामिनी विषबेलि तथामहाठगिनी के रुप में संबोधित किया। ' माया महा ठगिनी हम जानी। '1–

माँ तथा कन्या के रुप में वह प्रशंसनीय है। पतिव्रता नारी को अपनी साधना का आदर्श माना है। ' पतिव्रता का एक पति दूजा नहीं सुहाय। ' पति ही पत्नी का सर्वस्व है–' आखों की करि कोठरी पुतली पलंग बिछाय। ' सूफी साहित्य में नारी का नख नख वर्णन है,वह एक आदर्श प्रेयसी है, पत्नी है। नारी का पवित्र रुप प्रस्तुत किया गया पर मायास्वरुपा नारियों से बचने के लिए आग्रह किया गया है।

" नागमती यह दुनिया धन्धा।
बॉचा सोइ न यह चित बन्धा।"2–

तुलसी ने नारी के आर्दश के रुप में कौशिल्या , सुमित्रा तथा सीता को प्रस्तुत किया है फिर भी नारी की बहुत निन्दा की है। सूर की राधा, गोपियॉं,प्यार की पराकाष्ठा हैं। यशोदा तथा देवकी मॉं के रुप में आर्दश हैं, पर सूर ने भी नारी को मिथ्या तथा भक्ति के मार्ग में बाधक माना है। स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि सामान्य नारी मोक्ष मार्ग में बाधक है, पुरुष को भ्रष्ट करने वाली है। नारी की स्थिति बहुत सम्मानजनक नहीं रही है। कुछ चरित्र अलौकिक व वैशिष्टयपूर्ण हैं।

भक्तिकाल में मीराबाई को कवियित्री के रुप में उच्च स्थान प्राप्त है। किन्तु संयोग ही है कि उसके बाद किसी भी नारी लेखिका का नाम नहीं है। मीरा को भी सारे बन्धन तोड़ने पड़े तथा सामाजिक प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ा।

रीतिकाल में नारी को मुगलशासकों की विलासप्रियता के परिणामस्वरुप भोग–विलास की तुष्टि का साधन माना गया । कवि राजाश्रयी थे, राजा को प्रसन्न करके धन कमाना ही

1–कबीर ग्रन्थावली सं. पारसनाथ तिवारी पृ. 55

2–पद्मावत ' जायसी ग्रन्थावली' सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ. 261

उनका उद्देश्य था। नारी को अबला समझा। उनके श्रृंगार वर्णन की ही प्रमुखता रही। कवि को हर नारी में नायिका के ही दर्शन होते हैं, माँ, बहन, बेटी के नहीं। वह धन है–स्त्रीधन, गुलाम है, दासी है। जो राजा बलशाली है, वह उसका हरण कर सकता है। नारीको असहाय बना दिया गया है। उसे वेदों को पढने का अधिकार नहीं है। रीतिकालीन साहित्य में नारी की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है। किसी पुरुष का वर्णन क्यों नहीं है। नख–शिख वर्णन केवल स्त्री का ही क्यों? क्योंकि वर्णन करने वाला पुरुष वर्ग है। बर्नियर के अनुसार– " राजमहलों में स्त्रियों को आशिकाना शिक्षा दी जाती थी। सम्राट के महलों में सुरा–सुन्दरी का मुख्य व्यापार चलता था. ।...मदिरा एवं प्रमदा विलास के मुख्य साधन थे। "1–

यदि भक्तिकालीन नारी त्याग व निन्दा की वस्तु रही, तो रीतिकालीन नारी ऐकान्तिक भोग का साधन रही। उसका स्वतंत्र प्रेरक स्वरुप उपलब्ध नहीं होता। डॉ0 नगेन्द्र के शब्दों में–" नारी की सात्विकता स्वकीया की ' कुलकानि ' से उसका आत्माभिमान खंडिता की मान दशा से ,और उसकी बौद्धिक शक्तियाँ विदग्धा की चातुरी से आगे न जा सकती थी। "2–

आधुनिक युग के प्रथम चरण में अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् नारी दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ। नारी के अन्य रुप भी देखे जाने लगे। अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से आधुनिक प्रभाव हमारे समाज पर पड़ा। लोगों के सोचने का ढंग बदला। नारी स्वतंत्रता के विषय में भी सोचा जाने लगा।

" कोई भी रचनाकार समय से अप्रभावित नही रह सकता। या उदासीन नही रह सकता जिन प्रभावों में वह साँस लेता है, उनसे मुक्त रह कर सृजन सम्भव नहीं। "3–

भारतेन्दु की नारी ' प्रेममयी ' है पर विलासी नहीं। चन्द्रावली उनके नारी रुप का आर्दश है। द्विवेदी युग में नारी को उचित स्थान मिला ,वह पुरुष की सहयोगिनी बन गयी। गुप्त जी नारी की स्थिति से दुःखी हैं। वे चाहते हैं कि उसे उचित सम्मान मिले। वे कहते हैं–

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध, और आखों में पानी। "4–

1,2,3–समसामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध–डॉ. ज्ञानवती अरोरा
पृ. 220,220,12, । 4–यशोधरा मुखपृष्ठ– मैथिलीशरण गुप्त

उनके नारी पात्र उर्मिला,यशोधरा गरिमामयी नारियॅा हैं। वे अबला होकर भी सबला हैं। भारतीय संस्कृति में उनकी निष्ठा है। कैकयी को सदा कुटिल व हीन दृष्टि से ही देखा जाता रहा, किन्तु उनकी कैकयी समर्थ है–गरिमावान है, राम के मुख से कहलवाया है–

" माता न कुमाता पुत्र कुपुत्र भले ही।"1–

भाग्य की विडम्बना दिखा कर कैकयी के चरित्र को ऊॅचा उठाया।

नारी का इतना विशद वर्णन है पर नारी लेखिकाऐं एक भी नहीं हैं। एक दो कवयित्रियों के अलावा पूरा साहित्य नारी योगदान से अछूता रहा है।

कोई भी परिवर्तन अचानक नहीं होता। परिवर्तन धीरे–धीरे होता है। सामान्य को उसका आभास नहीं हो पाता। छायावादी साहित्य में नारी का नया रुप सामने आता है। ' प्रसाद ' की 'श्रद्धा ' विथकित मनु की विश्रांति है। ' तुलसीदास ' की ' रत्नावली ' प्रेरणा की स्त्रोत है। पंत ने नारी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को चार शब्दों में समोया है,देवि !,मॉ !,सहचरि!,प्राण!। पंत जी ने उसे बहुत कोमल सुकुमार माना है। महीदेवी वर्मा ने नारी की महानता को कभी डिगने नहीं दिया। महादेवी ने उसे वह स्थान दिया जिसकी वह अधिकारिणी है। उनकी नारी ' अनन्त सुहागिनी ' है। वह अपने प्रिय को सपने में बॉध लेना चाहती है। वह सक्षम है, समर्थ है। नारी विषय पर बहुत कुछ लिखा गया,पर वह पुरुष वर्ग ने लिखा। वही कार्य पुरुष करता है तो वह प्रशन्सा का पात्र है, किन्तु नारी करती है तो उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है।

संसार की लगभग आधी जनसंख्या नारी है, परन्तु उसकी सामाजिक, आर्थिक ,राजनैतिक दशा सदा पुरुष से हीन मानी गयी। इसका कारण समाज का नारी विषयक दृष्टिकोंण है। आर्थिक स्तर तथा जीवनादर्शों के कारण सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्य बदल जाया करते हैं। नारी परतंत्रता का एक मुख्य कारण उसकी जैविक संरचना है। बौद्धिक स्तर पर वह नर से किसी भी दशा में हेय नहीं है। प्रथम महायुद्ध के दौरान यह भेद समाप्त हुआ, क्योंकि उसे हर क्षेत्र में कार्य सॅभालना था। स्त्री–पुरुष का भेद समाज निर्मित है। इस भेद को दूर करने के लिए नारी–स्वातंत्र्य आंदोलन का सूत्रपात हुआ। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव स्वरुप

1–साकेत –मैथिली शरण गुप्त– पृ.155

नारी में जागृति आयी। उसने अपनी खोई गरिमा प्राप्त करने की चेष्टा की। पश्चिमी नारी का जीवन उसे अपनी तुलना में श्रेष्ठ लगा। समाजशास्त्रियों तथा समाजसुधारकों ने परम्परागत यातनाओं पर विचार किया। कट्टरवादिता,कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठायी , धार्मिक रुढ़िवादिता को नकारा। नारी संगठन निर्मित किए। नारी देश के भाग्य निर्माण में योगदान देना चाहती है, जिसे अपने घर के भाग्य निर्माण का ही सहयोगी नहीं माना जाता था।

सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया गया। सती–प्रथा, बाल–विवाह, विधवा–विवाह जैसी प्रथाओं पर विचार किया गया। राजा राममोहन राय ने सती–प्रथा को दंडनीय घोषित करवाया। विधवा विवाह को मान्य किया गया। विवाह की उम्र केशव चन्द्र सैन ने चौदह वर्ष करवायी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ' आर्य समाज ' की स्थापना की । दहेज प्रथा और पर्दा प्रथा का विरोध किया। हिन्दू प्रथा के अनुसार ही ये सुधार किये गये किन्तु कट्टरपंथी हिन्दु समाज में ये समस्यायें आज भी हैं। इन सुधारों का लाभ यह हुआ कि महिलाओं में जागरूकता आयी। गांधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग के लिए नारी को घर से बाहर निकलने के लिए ललकारा। इस ललकार का जादुई प्रभाव पड़ा। नारी समानता प्रश्न को भी गांधी जी ने गंभीरता पूर्वक लिया। देवदासी–प्रथा और वेश्यावृत्ति को समाप्त करना,उन्होंने आवश्यक माना। पुरुष ही उनके मतानुसार नारी के अधोगति का कारण है। गांधी जी ने नारी को दुर्बला नहीं सबला कहा। वह पुरुष की प्रेरकशक्ति है। उन्होंने नारी में आत्म सजगता उत्पन्न की । वे नारी को समाज में उचित स्थान दिलाना चाहते थे। बीसवीं शती के प्रारम्भ में स्वयं नारी ने नारी–संगठनों की स्थापना नारी स्वतंत्रता के लिए की। उसने आत्मोन्नति और आत्माभिव्यक्ति की आंतरिक तड़पन महसूस की। उसे समाज का विरोध तथा पूर्वाग्रह सहना पड़ा। राजकुमारी अमृतकौर के शब्दों में–

" हमें जीवन को अपने निर्धारित प्रतिमानों के अनुसार जीना है। अपने अस्तित्व के लिए स्वयं जूझना है।"1– श्रीमती ऐनीबेसेंट '1841' ने नारी–शिक्षा का संदेश दिया। 1917 में नारी मताधिकार की माँग की गयी। सरोजिनी नायडू भी नारी शिक्षा की समर्थक थीं। दुर्गाबाई देशमुख ने नारी–उत्थान के हर पहलू को स्पर्श किया। विजयलक्ष्मी पंडित के महत्वपूर्ण कार्यों

1–समसामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध–डॉ.ज्ञानवती अरोरा– पृ.228

द्वारा नारी जाति को सम्मान प्राप्त हुआ। इन महान – नारियों के प्रसंशनीय कार्यों द्वारा नारी जाति को समाज में महत्वपूर्ण स्थान मिला। इससे नारी को समाज व परिवार का महत्वपूर्ण सदस्य मान लिया गया। नारी की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई अधिनियम पास किए गये– नारी अधिकार अधिनियम 1952,नारी सम्बन्धी अनैतिक कार्य 1952,विवाह अधिनियम 1954, तलाक अधिनियम 1955, उत्तराधिकार अधिनियम 1956,अनाथ तथा विधवा संरक्षण अधिनियम ,दहेज अधिनियम 1961। इन अधिनियमों के पास हो जाने से नारी को अपने उद्देश्य में पर्याप्त सफलता मिली। इन सबका श्रेय ' अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' को है।

कस्तूरबा गांधी, स्वरूप रानी ,सरोजनी नायडू,राजकुमारी अमृत कौर ने राजनीति में भाग लेकर नारी की गरिमा को बढ़ाया। मताधिकार और समानता के अधिकार मिले। गांधी जी की आवाज पर नारी ने पर्दे को उतार फेका। राष्ट्रीयता व नारीवाद साथ–साथ विकसित हुए। भारतीय नारी में नेतृत्व की भावना विकसित हुई। नारी ने सभी क्षेत्रों में पदार्पण किया। अपना सिक्का विज्ञान,टेक्नोलॉजी हर क्षेत्र में जमाना प्रारम्भ किया। साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान मध्यकाल से ही रहा है। लेकिन साहित्य की जो एक महत्वपूर्ण विधा नाटक है, उसमें नारी का प्रवेश क्यों नहीं हुआ , यह भी एक अनबूझ पहेली सी है।

नारी नाटक के विकासकम में स्वातंत्र्योत्तर शब्द का विशेष महत्व है, क्योंकि स्वतंत्रता के पश्चात् राजनीतिक परिस्थितियों से उद्भूत परिस्थितियों का प्रभाव समस्त साहित्य पर पड़ा और नारी लेखिकाएँ भी परिवेश की चेतना से प्रभावित हुए बिना न रह सकीं। कमलेश्वर के शब्दों में –

" स्वातंत्र्योत्तर को एक विभाजक –विन्दु के रूप में देखा गया। स्वतंत्रता–प्राप्ति यदि एक ओर भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी तो दूसरी ओर देश– विभाजन से उत्पन्न एक विचित्र सांस्कृतिक संकट का सामना देश को करना पड़ा,जिसका प्रभाव देश के साहित्य पर एक दीर्घ अवधि तक छाया रहा।" 1–

राजनैतिक परिवेश ने मानवमूल्यों को खंडित कर दिया,जिसने रचनाकार की चेतना को प्रभावित किया। राजेन्द्र यादव के शब्दों में " अस्तित्व का संघर्ष आदमी को एक बार पुनः

1–सम सामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध–डॉ. ज्ञानवती अरोरा–पृ.15

आदिम स्तर पर उतर आने को मजबूर कर रहा था।" राजनैतिक जीवन की भ्रष्टता का उसकी गलत नीतियों का प्रभाव व्यक्ति के पारिवारिक जीवन को भी अछूता नहीं छोड़ता है।

सरकारी प्रतिवेदनों के अनुसार देश प्रगति के पथ पर है,किन्तु आम आदमी के लिए इसकी सार्थकता ? काम और रोटी की व्यवस्था के अभाव में आम जन हताश,निराश एवं टूटन की स्थिति में है। सरकार के प्रति निष्ठा में कमीं , अनुशासनहीनता उत्पन्न करने का कारण बनीं। लोकतंत्र में लोकचिंतक कोई नहीं है। बड़ी–बड़ी योजनाएँ केवल कागज पर देखने के लिए हैं।

आर्थिक परिस्थितियाँ भी नारी को जागरूक करने में सहायक हुई। हर पल संघर्ष आज मानव की नियति है। परिणाम स्वरूप अर्थ मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण मूल्य बन गया। अर्थ ने मानव संबन्धों को प्रभावित किया। व्यक्ति का घनिष्ठतम तथा निकटतम् सम्बन्ध परिवार से ही होता है। डॉ.सुमन मेहरोत्रा का कथन है।–

"धनाभाव के कारण इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो सकी और व्यक्ति निराश होकर कुण्ठाओं से ग्रसित होता गया।"–1

सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों के निर्धारण में अर्थ एक अहम् निर्णायक तत्व बन गया । सर्वाधिक परिवर्तन अर्थ की दृष्टि से नारी की स्थिति में हुआ है। आज की नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र रहना चाहती है। उसे किसी के ऊपर निर्भर रहना पसन्द नहीं है। आर्थिक स्वतंत्रता को पुरुषों ने स्वीकार किया है। पुरुषों द्वारा नारी पर किए गये अत्याचार का मूल कारण आर्थिक परतंत्रता ही है। नौकरी एवं उत्तराधिकार ने उसकी स्थिति को सर्वाधिक बदल दिया। आर्थिक विवशता ने ही पारिवारिक मूल्यों को सर्वाधिक तोड़ा और सभी सम्बन्ध औपचारिक हो गये। यहाँ तक धन कमाने के उद्देश्य से महिलाओं को भी परिवार,पति से अलग रहना पड़ा। पारिवारिक सम्बन्धों में माँ–पुत्र,पिता–पुत्र,भाई–बहन,पति–पत्नी के सम्बन्धों में परिवार की सीमा के अन्दर बदलाव आने का प्रमुख कारण अर्थ रहा है। व्यक्ति की अस्मिता की पहचान धन ही हो गया।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था परिवेश के दो प्रमुख घटक हैं। समाज–व्यवस्था इनसे

1–सम सामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध–डॉ. ज्ञानवती अरोरा–पृ.17

प्रभावित रहती है। यद्यपि परिवर्तन की प्रकिया स्वतंत्रतापूर्व ही प्रारम्भ हो चुकी थी,किन्तु परिवर्तन का स्वरूप स्वातंत्र्योत्तर काल में अधिक स्पष्ट हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जन चेतना केवल स्वतंत्रता पाने में ही व्यस्त रही। उस समय स्वतंत्रता ही उनका मूल लक्ष्य था। जन–मानस आशान्वित था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उनकी सभी समस्यायें समाप्त हो जायेंगी। किन्तु ऐसा कुछ न हो सका। समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर है, किन्तु मूलभूत समस्यायें ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। नारी जागरूक हो चुकी थी। समस्याओं के दौर से गुजर रही थी। परिवेश का,समाज का असर रचना पर पूर्णतः पड़ता है। संवेदनशील कहानीकार मोहन राकेश ने इसी जुड़ाव की ओर इंगित किया है–

" कोई भी रचनाकार समय से अप्रभावित या उदासीन नहीं रह सकता । जिन प्रभावों में वह साँस लेता है,उससे मुक्त रहकर सृजन सम्भव नहीं है।" 1–

पश्चिमी चिन्तन का प्रभाव भी हमारे साहित्य पर पड़ा। समाज वैचारिक दृष्टि से मार्क्स,कामू,सार्त्र जैसे पश्चिमी विद्वान चिन्तकों की विचार धाराओं से भी प्रभावित हो रहा था। मार्क्स के प्रभाव स्वरूप समाजवादी चेतना विकसित हुई। लोकतंत्र में समाजवादी चेतना का विकास अवश्यम्भावी था। कामू एवं सार्त्र ने व्यक्ति को महत्व दिया। समाज महत्वपूर्ण है तो उसका घटक 'व्यक्ति' जो समाज को निर्मित करता है और अधिक महत्वपूर्ण है। व्यक्ति की इच्छाओं,आकांक्षाओं, लालसाओं को दमित करने के स्थान पर उसकी नैसर्गिकता को समझा गया। यदि व्यक्ति की भावनाओं को कुचला गया,तो वह कुंठित हो जायेगा। कुंठित ,पीड़ित मानव स्वस्थ समाज की रचना कभी नहीं कर सकता। परन्तु पीड़ाओं,कुण्ठाओं और व्यक्ति के अस्तित्व को सैद्धान्तिक स्तर पर ही समझा गया। उसकी पीड़ा ,दर्द और टूटन घटने की अपेक्षा बढ़ी। जिससे निराशा ने जन्म लिया। निकटतम् सम्बन्धों की उष्मा ठंडी पड़ने लगी। मन्नू भंडारी का ' बिना दीवारों का घर' में पति पत्नी के सम्बन्धों में उष्मा नहीं है। इसीलिए वे अपने स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान के लिए अपने घर की दीवारों को निःसंकोच तोड़ डालते हैं। समाज के स्थान पर व्यक्ति और उसके सम्बन्ध ,सुख–दुख को अधिक महत्व दिया जाने लगा।

वैज्ञानिक दृष्टि ने भी हमारी जीवन पद्धति को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

1–सम सामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध–डॉ. ज्ञानवती अरोरा–पृ.19

जिससे लोगों की आस्था पुराने मूल्यों से टूट गयी और लोग नये मूल्यों की खोज में लग गये। वेज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग ने मनुष्य की उन पर निर्भरता को बढ़ा दिया। संचार साधनों की सुविधा के कारण संसार संकुचित हो गया। जिससे नवीन संस्कृतियों के आदान –प्रदान ने नवीन दृष्टि समाज और व्यक्ति को प्रदान की। महिलाओं ने भी धार्मिक रूढ़ियों से बाहर निकलकर स्वस्थ मानसिकता से जीवन मूल्यों के विषय में सोचना प्रारम्भ किया। उनकी प्रतिभा जो अभी तक दबी पड़ी थी, कुंठित थी उसे भी एक नया आयाम मिला।

समाज व्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया का अधिक जोर पकड़ने का कारण है– औद्योगीकरण। जनता काम पाने के लिए शहरों की ओर भागने लगी। जिससे महानगरों का विकास हुआ। जहॉं जीवन अत्यधिक व्यस्त एवं त्रस्त है। व्यक्ति अपनी पहचान के लिए आतुर है,जैसे वह अपार भीड़ में खो गया है। फलस्वरूप समाज में अधिकाधिक परिवर्तन हुए।संयुक्त परिवार टूट गये। परिवार के प्रति जुड़ाव रखते हुए भी समय की मॉंग उच्च शिक्षा नौकरी की तलाश में जब पुरुष बाहर आया तो साथ में उसकी पत्नी तथा बच्चे भी आए। धीरे–धीरे लोगों को एकल परिवार ही अच्छे लगे। खासकर महिला वर्ग संयुक्त परिवार की पाबन्दियों,रूढ़ियों वैचारिक स्वतंत्रता न पाने से तथा अपनी पहचान न बना पाने से अन्दर ही अन्दर कुण्ठित था,उनके लिए ये एकल परिवार वरदान साबित हुए। इसका परिणाम सर्वप्रकारेण शुभ ही हुआ ऐसा नहीं है, पारिवारिक मर्यादायें टूटी। पारम्परिक आदर्श व मूल्य खो गये। भारतीय समाज पारिवारिक मजबूरियों का शिकार हो गया। परिवार में आत्मीयता शब्द जैसे अर्थहीन हो गया। संयुक्त परिवार की मिठास कसैली हो गयी । आज परिवार के नाम पर केवल पति पत्नी व बच्चे ही हैं। मॉं–पिता जिनकी वे सन्तान हैं, वे भी उसके परिवार के दायरे में नहीं आते है। आज मनुष्य को अपनी ही पड़ी है,परिवार व समाज की उसे परवाह नहीं है। उसकी इच्छाएँ क्या हैं,उसकी योजनाएँ क्या हैं वही महत्वपूर्ण है, घर के अन्य सदस्य क्या चाहते है, जैसे उसे परवाह ही नहीं। इन परिस्थितियों का प्रभाव भी नारी पर पड़ा। व्यक्ति स्वातंत्र्य की अपूर्व चेतना ने परम्परागत पारिवारिक मूल्यों में विघटन की स्थिति उत्पन्न कर दी । फलस्वरूप संयुक्त परिवार टूटे। एकल परिवारों का जन्म हुआ। लोग अपने छोटे–छोटे परिवारों में व्यस्त हो गये। एकल परिवारो में स्वतंत्रता ज्यादा मिली। वे भी अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हुई। आर्थिक परेशानियों के कारण तथा अपनी पहचान के लिए वे भी बाहर निकली,नौकरी करने

लगी। हर क्षेत्र में उन्हें अवसर मिले । आत्मनिर्भर बनने से उसकी सामाजिक व पारिवारिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। उसके कमाऊ रूप का स्वागत हुआ। पति व परिवार के सदस्यों के द्वारा उसकी नयी भूमिका को स्वीकारा गया। पति का उसे हर क्षेत्र में सहयोग मिलने लगा। पति अब केवल उसका स्वामी नहीं उसका जीवन–सहचर है,जीवन–साथी है। इन परिस्थितियों के फलस्वरूप प्रेम–विवाह, अन्तर्जातीय विवाह ,विधवा विवाह को समाज,परिवार तथा कानून की दृष्टि से मान्यता मिली।

आज समाज व पुरुष का दृष्टिकोण भी नारी के प्रति बदल गया है। पहले उसका नौकरी करना उसे पसन्द न था,जब तक कोई मजबूरी न हो, किसी भी क्षेत्र में घर से बाहर जाना उसे पसन्द न था, किन्तु आज स्थिति बदल गयी है। बढ़ती मँहगाई ने आवश्यक बना दिया है कि घर में कमाऊ सदस्यों की संख्या अधिक हो,तथा आज नारी भी स्व–अस्तित्व की पहचान के लिए अपने अनुरूप कार्य करना चाहती है। आज वह पुरुष की अनुगामिनी नहीं है,वह पुरुष की सहगामिनी है। आज साहित्य सृजन के साथ – साथ हर क्षेत्र में नारी आगे आयी है। अब तो वह भारतीय सेना में पायलट का काम भी कर रही है। वह अपने क्षेत्र में सफल भी है। वह सफल डॉक्टर है, इंजीनियर,प्रोफेसर,वकील,लेखिका सभी है। आज वह अपने निर्णय लेने में स्वयं सक्षम है। उसे कहीं कोई शिकायत या अपने निर्णय पर पछतावा नहीं है। मृदुला गर्ग के नाटक ' तुम लौट आओ' की नायिका मीता जो महेन्द्र से प्रेम विवाह करती है , महेन्द्र अमेरिका जाने में अपने होने वाले बच्चे को अवरोध मानता है,माँ व बूआ जी भी गर्भपात की सलाह देती हैं। किन्तु मीता अपने निर्णय से डिगती नहीं। वह मीता जिसकी जिन्दगी की हर समस्या महेन्द्र को पाने की है। वह अकेले अपने बच्चे की परवरिश के लिए तैयार है। आज की नारी जिन्दगी की हर परेशानी का सामना करने में अपने को समर्थ मानती है।

मन्नू भंडारी के नाटक–' बिना दीवारों का घर ' में शोभा जो अजित के द्वारा शिक्षिति की जाती है, अजित ही उसकी प्रेरणा है,अजित के सपने को साकार करने के लिए उसने उच्च शिक्षा ली , संगीत सीखी। अजित के विरोध के कारण अपने आत्मसम्मान के लिए बच्ची तथा घर का परित्याग कर देती है। उसे कोई पश्चाताप् नहीं है।

आज नर–नारी सम्बन्ध ने भी नया रूप ले लिया है। इन सम्बन्धों पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट दिखता है।

विवाह एक पवित्र बन्धन नहीं है। स्त्री–पुरुष के मध्य मात्र समझौता है जो अटूट था,उसे तोड़ा भी जा सकता है। पिता,पुत्र,पति पर निर्भर रहने वाली नारी आज आत्म अन्वेषण में लीन है। पुरातन मूल्य और आर्दश आज अर्थहीन लगते हैं। ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा प्राप्त प्रशासनिक सेवारत, विश्वभ्रमण करने वाली नारी,पर्वतारोहण करने वाली नारी के उदाहरण हमारे सम्मुख है , जिसने परम्परागत नारी के बिम्ब को तोड़ डाला है। निरन्तर संघर्षो तथा उससे जूझने के कारण उसमें आत्मविश्वास भी प्रचुर मात्रा में आया है। समाज में आए अनेकानेक परिवर्तनों का शिकार नारी जगत भी हुआ। पारिवारिक विघटन, एकल परिवार का भी नारी जगत पर प्रभाव पड़ा। परिवार का स्वरुप बदला। अब परिवार जैसे शब्द की परिधि में केवल पति–पत्नी और बच्चे ही आते हैं। परिवार का विशाल स्वरुप संकुचित हो गया। यहाँ तक कि माता पिता भी परिवार से बाहर मेहमान हो गये। आपसी सामन्जस्य के अभाव में अहम् का टकराव हुआ तथा तलाक प्रथा जो पश्चिम की देन है, हमारे देश में भी सहज हो गयी। विवाह जैसे पवित्र बंधन को तलाक का राहू ग्रसने लगा। अपने अस्तित्व की पहचान ने नारी की मानसिकता को जकड़ा। नारी जिसकी पहचान पिता, पति, पुत्र से ही थी, वह अपनी पहचान के लिए छटपटाने लगी। समाज में अनेक विसंगतियॉं आयीं। जिसे उजागर करने के लिए, मन में आए आक्रोश को व्यक्त करने का माध्यम लेखनी बनी। आज के युग का सशक्त माध्यम लेखनी जो तलवार की धार से भी पैनी है, उससे तरह–तरह की रचनायें हुईं। सामाजिक विसंगतियॉं, कुंठायें, आक्रोश कहानी तथा नाटक के माध्यम से व्यक्त किये गये।

पुरुष वर्ग ने भी इन सभी अवस्थाओं को उजागर करने के लिए रचनायें प्रस्तुत कीं। पर वह गहराई न आ सकी जो आनी चाहिए थी। क्योंकि पुरुष वर्ग भुक्तभोगी नहीं था। भुक्तभोगी से तात्पर्य है–कि जैसा जीवन जी चुका होता है, जीता है या बहुत नजदीक से महसूस करता है, उसे ही लिखे, उससे ही प्रभावित होकर लिखे। परिवेश से उसे वैचारिक शक्ति मिलती है। डॉ0 नामवर सिंह ने एक निबन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं–" साहित्य रचना की प्रक्रिया में समाज, लेखक, और साहित्य परस्पर एक दूसरे को इस तरह प्रभावित करते हैं कि इनमें से प्रत्येक क्रमशः परिवर्तित व विकसित होता रहता है। समाज से लेखक, लेखक से साहित्य, और साहित्य से पुनः समाज । समाज से तात्पर्य राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,

परिस्थितियों से है जो लेखक (कहानीकार) की दृष्टि का परिचालन करती है। समाज का प्रभाव कृति पर पड़ता है। कृति का लक्ष्य सदा मानव हित हुआ करता है। "1–

नारियों ने नाटक, कहानी, उपन्यासों तथा कविताओं के माध्यम से अपनी बातों को तत्कालीन समस्याओं को हमारे सामने रखा। नारी लेखिकाओं में उषा, प्रियम्बदा,मन्नू भंडारी, शिवानी, अमृता प्रीतम, सरोजिनी प्रीतम का नाम उल्लेखनीय है। नारी नाटक लेखिकाओं में मन्नू भंडारी, मृणाल पान्डेय,गिरीश रस्तोगी,शांति मेहरोत्रा,कुसुम कुमार आदि लेखिकाओं के नाम सर्वविदित हैं।

इस अध्याय में हमने देखा नाटक के क्षेत्र में नारी का पदार्पण नारी उत्थान व जागरण का परिणाम है। समाज का प्रभाव रचनाकार पर पड़ता है। भीष्म साहनी के मतानुसार –" रचनाकार एकाकी जीव नहीं है। एक लेखक पर उसके परिवेश का,उसके युग का, अपने समूह में प्रचलित मानदण्डों का प्रभाव होता है। वह एक साथ अपने समाज की उपज है , और अपने समाज को प्रभावित करता है। उसे एक अजनबी नहीं माना जा सकता। उसकी रचना का उसके समाज के लिए विशेष महत्व है।, क्योंकि एक तरह से वह अपने समाज का उत्पादन है। वह अपनी परम्पराओं सामाजिक रीति–नीतियों से कदापि विमुख नहीं हो सकता, अन्यथा उसकी रचना का कोई उद्देश्य नहीं रह जाता। उनका विश्वास है कि प्रत्येक रचना जिन्दगी की कोख से ही जन्म लेती है। इसमें संदेह नहीं है कि जो लेखक जिन्दगी में जितना गहरा डूबेगा, उसकी रचनाओं में उतनी ही प्रमाणिकता आयेगी। "2–

संवेदनशीलता नारी का गुण रहा है। एक तरफ परम्परागत नारी की विवशतायें थीं, आर्थिक , सामाजिक पराधीनता थी, दूसरी तरफ पाश्चात्य संस्कृति, सभ्यता का आक्रमण, शिक्षा पद्धति का प्रभाव,नारी मानसिकता में बदलाव आया। फलस्वरुप धार्मिक सामाजिक मान्यतायें बदलीं।

कहीं जोश में कहीं मजबूरी में महिलाऐं नौकरी में आयीं। शिक्षा के फलस्वरुप अपने अस्तित्व का अहसास हुआ। इसलिए कुछ महिलाऐं अविवाहित रहने लगीं। फलस्वरुप नारी जीवन में विभिन्न प्रकार की विकृतियां आयीं। पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव यौन सम्बन्धों पर भी

1–सम सामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध–डॉ. ज्ञानवती अरोरा–पृ.12,13

पड़ा। नारी समाज विभिन्न विकृतियों एवं मजबूरियों से घिर गया। फलस्वरुप शिक्षित महिलाऐं रचनात्मक क्षेत्र में आयीं। भरतमुनी के समय से ही नाटक अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम रहा है। इसलिए नारी लेखिकाओं ने अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देने के लिए नाटक को माध्यम बनाया। नौकरीपेशा महिलाओं की समस्याओं, अविवाहित महिलाओं की समस्याओं ने नारी को आकृष्ट किया। उषा प्रियम्बदा के उपन्यास ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' इसी समस्या को हमारे सम्मुख रखता है। मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों व उपन्यासों के माध्यम से इन विषयों को स्पर्श किया। एकल परिवार की समस्याओं, एकल परिवार में बड़े हो रहे बच्चों की समस्याओं को भी माध्यम बनाया।

जो कुछ भी विधि–विधान व रीति–रिवाज बनते हैं, वे समय व समाज के अनुरुप ही बनते हैं। वेदों में मैत्रेयी व गार्गी जैसी महिलाओं का जिक्र है, जो सम्माननीया, पूज्या थीं, किन्तु मध्य काल में आ कर इनकी स्थिति इतनी दयनीय हो गयी कि नारी का अस्तित्व ही धूमिल हो गया।

नारी की इस दशा के पीछे धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक कारण महत्वपूर्ण था, फलस्वरुप नारी की यह अवदशा हुई, और समाज की पूरी मानसिकता ही नारी विरोधी हो गई। इसलिए किसी एक कारण को महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता।

जो कोई भी कारण महत्वपूर्ण रहा हो, किन्तु नारी लेखिकाओं के प्रदेय से हिन्दी साहित्य गौरवान्वित हुआ। नारीं लेखिकाओं के बहुमूल्य योगदान साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इन नारी नाट्य लेखिकाओं ने विविधरंगी नाटक लिखे, जिसकी चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे।